International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 4.935
Vol.6 No.3 Jan – Feb 2019

हिंदी नाट्य-साहित्य में राष्ट्रीय भावना की परंपरा एवं सेठ गोविंददास के नाटक

डॉ. रशीद नजरुद्दीन तहसिलदार
हिंदी विभाग,
कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापूर.

प्रस्तावना :

हिंदी नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय भावना की परंपरा काफी प्रदीर्घ है। राष्ट्र के प्रति आस्था एवं निष्ठा रखने का भाव हर युग में, हर राष्ट्र में पाया जाता है। हिंदी नाट्य साहित्य में भारतेंदु काल से यह प्रवृत्ति अधिक बलवान हुई। किंतु उसके पहले भी लिखे नाटकों में राष्ट्रीय भावना के अंश पाए जाते हैं। भारतेंदु कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना पर्याप्त मात्रा में मिलती है। राष्ट्रभक्ति के साथ-साथ ब्रिटीश शासन के विरोध में असंतोष एवं विद्रोह की भावना इन नाटकों में मुख्य रूप से पायी जाती है। अतीत की स्मृतियाँ हमेशा इन नाटककारों को उद्वेलित करती रही है। गौरवपूर्ण अतीत के माध्यम से उदात्त चरित्रों की सृष्टि कर महान व्यक्तित्वों के आदर्शों की प्रतिष्ठापना नाटकों में की गई है। पराधीनता के बोध से निराश एवं हताश हुई जनता को एक सूत्र में बाँधकर स्वराज्य की माँग इस युग के नाटकों में पायी जाती है।

प्रसादकालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना में वृद्धि हुई है। आंदोलनों की पृष्ठभूमि के कारण इस काल में सारे राष्ट्र में देशभक्ति का स्वर गुँज उठा था। हर देशवासी में राष्ट्र की आजादी की भावना तीव्र हो उठी थी जिसके लिए वे क्रांति करने के लिए तैयार हुए थे। वर्तमान दुर्दशा को मिटाने तथा स्वाधीनता की भावना को साकार बनाने के लिए इस युग के नाटककारों ने राष्ट्रीय ऐक्य की आवश्यकता पर बल दिया है। गांधीवाद के सैद्धांतिक पक्ष की अभिव्यक्ति इस युग के नाटकों की अलग विशेषता रही है। प्रसादोत्तर कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना विविध पहलुओं के साथ चित्रित हुई है। इस युग में देश को आजाद बनाने के लिए सक्रिय एवं क्रांतिकारी प्रयत्न हो रहे थे। महात्मा गांधीजी ने अहिंसक मार्ग से विविध आंदोलनों के सहारे ब्रिटीश शासन पर दबाव बढाया था। सारे राष्ट्र में अंग्रेजों के शोषण के साथ-साथ पूँजीपतियों के शोषण का तीव्र विरोध हो रहा था। राष्ट्र को स्वाधीन बनाकर उसके सुरक्षा संबंधी भावों की अभिव्यक्ति इस युग के नाटकों की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। राष्ट्र के उन्नयन हेतु जिन आदर्श तत्त्वों की आवश्यकता थी उनकी पूर्ति करने का प्रयास इस युग के नाटककारों ने की है। राष्ट्रीय भावना की परंपरा में सेठ गोविंददास का स्थान अक्षुण्ण है। वे ऐसे प्रखर राष्ट्रभक्त है, जिन्होंने व्यक्तिगत सुख सुविधाओं को त्यागकर राष्ट्र के लिए आत्मोसर्ग किया है। उनका संपूर्ण नाट्यसाहित्य राष्ट्रीय भावना से प्रेरित दिखाई देता है। राष्ट्रीय भावना के विविध पहलु व्यापकता के साथ उनके नाटकों में व्यक्त हुए हैं। अत: हिंदी नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय भावना की परंपरा एवं सेठ गोविंददास के नाटक आदि का विस्तृत विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत पेपर का उद्देश्य है। इसमें विविध कालखंडो के आधार पर विवेचन विश्लेषण कर इस परंपरा में सेठ गोविंददास के नाटकों के स्थान को अधोरेखित किया जाएगा।

भारतेंदुकालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना(सन् 1858 ई.से. 1905 ई. तक):

भारतेंदु के लेखन में विलक्षण प्रतिभा और अपूर्व शक्ति थी। भारतेंदु - साहित्य का निर्माण करनेवाले क्रांतिकारी कलाकार थे। उन्होंने नए युग का नेतृत्व किया था। ईन्होंने आम जनता में राष्ट्रीय भावना जगाने की कोशिश की। जब अंग्रेज सरकार के खिलाफ एक शब्द भी कहना अपराध माना जाता था, तब भारतेंदु ने अपने

नाटकों द्वारा राष्ट्रीय भावना जागृत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया हैं उनका यह साहस इतिहास में हमेशा सराहनीय रहेगा।

भारतेंदु का काल अर्थात् सन् 1858 ई. के बाद का माना जाता हैं सन् 1857 ई. की क्रांति के पश्चात् भारतीय जनता का सीधा संबंध ब्रिटिश पार्लमेंट से हो गया था। भारतीय जनता का असंतोष, अविश्वास तथा ब्रिटिश शासन की ओर से होनेवाले घृणा भाव को मिटाने के लिए राणी व्हिक्टोरिया ने अपने घोषणापत्र द्वारा शासन के प्रति उदारता, दया, धार्मिक सहिष्णुता आदि का आश्वासन दिया। घोषणा पत्र के कारण भले ही इस भारतीय जनता में नवीन आशा पल्लवित हो गई थी परंतु कुछ समय के पश्चात् सभी आशाएँ खाक बन गई थी। इसी परिस्थिति के चलते सन् 1858 ई. में 'इंडियन नेशनल काँग्रेस' संस्था के निर्माण से लोगों में आस नई आशाएँ जन्म लेने लगी। 'इंडियन नेशनल काँग्रेस' की स्थापना के संदर्भ में गुरुमुख निहाल सिंह कहते हैं,''इंडियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना आस राष्ट्रीय-आंदोलन के प्रारंभ के बारे में कितने ही कारण बताए जाते हंव लाला लजपतराय के अनुसार इनमें से मुख्य कारण था प्रवर्तकों की साम्राज्य को छिन्न होने से रोकने की तीव्र इच्छा।''स्पष्ट हव क्रांतिकारी लोग साम्राज्य को छिन्न-भिन्न होने से बचाना चाहते थे।

भारतेंदु काल में सुधारवादी आंदोलनों के साथ कई छोटे-मोटे आंदोलन हुए जिन्होंने राष्ट्रीय भावना जागृत करने में मदद की। भारतेंदुकालीन नाटककार एक नवीनतम् आस स्वस्थ दृष्टिकोण लेकर भारत देश आस जाति के विशाल प्रांगण में प्रस्तुत हुए। इन्हीं नाटककारों के प्रवेश के साथ इस युग में नई चेतना, नई शिक्षा, नया दृष्टिकोण तथा पाश्चात्य विचारों का प्रसार तेजी से होने लगा। देशप्रेम से भरपूर, नवनिर्माण के उत्साह से प्रेरित तथा जन्मभूमि की सेवा करने की अदम्य लालसा ने राष्ट्रीय भावना की भूमिका प्रस्तुत कर दी। ''भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके युग के नाटककारों ने अपने चारों ओर के जीवन तथा भारतीय पुराणों तथा इतिहास से संवेदना स्वीकार की आस जीवन को पुष्ठ कर जन-मन की वीणा से स्वर संकृत करने का सराहनीय प्रयास किया।'' स्पष्ट है तत्कालीन नाटकारों ने साधारण जनता को केंद्र में रख कर अपना कार्य किया है।

भारतेंदुकालीन नाट्य साहित्य में नवउन्मेष की भावना मुखरित हो उठी थी। इस काल के नाटककारों ने अपने नाटकों में राष्ट्रहित और राष्ट्रकल्याण की भावना तीव्र रूप से प्रकट की। परिणाम स्वरूप तत्कालीन समय में स्वदेश संगीत की लहर-सी दौड़ गई। भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा इस काल के साहित्य का मार्ग निश्चित हुआ था। अतः इसी कारण भारतेंदु को ही इस नवउत्थान काल का नेता कहा जाने लगा।इसिलिए यहाँ भारतेंदुकालीन नाट्य साहित्य में अंतर्भूत राष्ट्रीय भावना के तत्त्वों का विवेचन करना अनिवार्य बन जाता है।

- राजभक्ति तथा ब्रिटिश शासन से संतोष
- गास्वपूर्ण अतीत का चित्रण
- भ्रष्ट राजनीति से असंतोष
- सुधार की भावना
- हिंदी भाषा के प्रति अनन्य प्रेम
- हिंदू धर्म के प्रति अगाध निष्ठा
- राष्ट्रनिर्माणात्मक भावों की अभिव्यक्ति
- पराधीनता का बोध

प्रसादकालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना (सन् 1906 से 1934 तक) :

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में अर्थात् इसके प्रथम पाँच वर्षों के अंतर्गत भारतीयों में अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध प्रबल रूप में खड़ा हुआ था। अंग्रेज शासन के प्रति विरोध के लिए कई कारण उपस्थित थे। अंग्रेज

शासन के विरोध में भारतीयों का स्वातंत्र्य आंदोलन जारी था। सन् 1905 यह वर्ष भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के इतिहास में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

भारतेंदु युग में राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण हुआ था।19वीं शताब्दी के अंत में काँग्रेस समिति की स्थापना आदि के कारण राष्ट्रीय भावना ने भारतीयों के हृदय में अपना स्थान प्राप्त कर लिया था। परंतु बीसवीं सदी में काँग्रेस में जीवन आई जागृति के विकास के साथ-साथ राष्ट्रीयता का भी समुचित विकास हुआ। प्रसाद काल में राष्ट्रीयता के सांस्कृतिक आई राजनीतिक दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति मिलती है।

भारतेंदु काल में स्थित ब्रिटिश शासन व्यवस्था तथा उनका पक्षपातपूर्ण व्यवहार, अकाल, महंगाई, भ्रष्ट राजनीति, देशी, उद्योगधंदों का पतन आदि के कारण भारतीयों के मन में असंतोष की ज्वाला भड़क उठी थी तथा उसने उग्र रूप धारण कर लिया था। सन् 1906 ई. से सन् 1934 ई. तक देश की स्वतंत्रता को लेकर कई आंदोलन हुए। भारतीयों द्वारा हुए कई आंदोलनों को अंग्रेजों द्वारा विरोध किया गया तथा उसे कुचला गया। परंतु भारतीय अंग्रेजों की इस कुटनीति से चुप नहीं रहे। उन्होंने गुप्त तथा हिंसात्मक रूप से आंदोलन कर उनका जबाव दिया। इसी युग में गांधीजी स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख नेता के रूप में सिद्धहस्त हुए तथा उन्होंने कई अधिवेशन तथा आंदोलनों के माध्यम से देश को स्वतंत्र बनाने का प्रयास किया। इन्हीं प्रयत्नों के कारण गांधीजी ने कई आंदोलन किए, अनशन किए तथा स्वतंत्रता के लिए वे जेल भी चले गए।

स्वाधीनता आंदोलन के इसी युग में स्वदेशी आंदोलन, क्रांतिकारियों द्वारा किए आंदोलन, मुस्लिम लीग अधिवेशन, लखनाक्अधिवेशन, होमरूल लीग की स्थापना, प्रथम विश्वव्यापी महायुद्ध, रालेट ॲक्ट का भारत में जारी होना, जालियनवाला बाग हत्याकांड, सरकार के विरोध असहयोग आंदोलन, सायमन कमिशन के विरोध में हड़ताल, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि कई घटनाएँ भारतीय इतिहास में घटित हुई हैं जिनके कारण भारत देश के प्रमुख नेतृत्व के रूप में उपस्थित गांधीजी तथा अन्य नेताओं को आमरण अनशन एवं आंदोलन करना पड़ा। साथ ही जेल भी जाना पड़ा परंतु वह नहीं रुके। जनता में एक व्यापक आई जबरदस्त आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस कारण सरकार ने भी कठोरता से दमन कार्य प्रारंभ किया परंतु सरकार की उत्तरोत्तर नग्न आई उग्र रूप धारण करनेवाली दमननीति के कारण नवजागृत चेतना भी व्यापक आई विस्तृत, गहरी होती गई। इस दमननीति से पोषण पाकर राष्ट्रीय अभ्युत्थान उलटा बढ़ने लगा। इस प्रकार इस युग में स्वतंत्रता के लिए जनता में तीव्र आंदोलन की भावना थी। इससे यह स्पष्ट होता है्कि भारतेंदु काल में राष्ट्रीय भावना भले ही अपने शैशवावस्था में थी लेकिन प्रसाद काल में उसका विकास हुआ।

भारतेंदु युग में प्राप्त नवचेतना को, इस प्रसाद काल में प्राचीन संस्कृति के उत्थान तथा नई सामाजिक चेतना के निर्माण के उपलक्ष्य में आयोजित करने का सराहनीय प्रयास किया गया है। भारतेंदु काल में निराशा के कारण आशावाद का अभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। परंतु आलोच्यकालीन साहित्य आशा-आकांशा, कर्म, जीवन, बल आई बलिदान से ओतप्रोत प्रतीत होता है। प्रस्तुत काल के नाटकों में पराधीनता की दुर्बलता के प्रति क्षोभ तथा आक्रोश की भावना दृष्टव्य थी। परंतु शोषक आई पीड़ादायक शासन के प्रति हिंसात्मक तथा उग्रता का भाव स्पष्ट नहीं होता। साम्यवाणी में तत्कालीन काल में राष्ट्रीयता अभिव्यक्त नजर आती है।

सन् 1906 ई.से सन 1934 ई. तक के युग में जयशंकर प्रसाद को आलोच्यकालीन नाटक साहित्य के नेता कहा जा सकता है। क्योंकि प्रसाद के समान अन्य किसी भी तत्कालीन नाटककार में राष्ट्रीयता की पूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त नहीं होती। प्रमुख रूप से देखा जाए तो प्रसाद के अधिकांश नाटकों का विषय भारतवर्ष ही रहा है। डॉ. रामरतन भटनागर के अनुसार ''प्रसाद के लिए देश उससे कहीं अधिक सत्य है्जिस देश की पूजा हमारे राजनीतिक नेता करते हैं। भारत की सारी प्रकृति, भारत की सारी आध्यात्मिक निष्ठा, भारत के नगर-ग्राम, भारत के नर-नारी, भारत के कला-विज्ञान के सपने, सब उनके स्वप्न में कुछ ऐसी सतरंगी रंगो में ली जाती है्कि उनकी देश की कल्पना आश्विक बन जाती है।'' इस प्रकार का मंतव्य प्रसाद के विषय में प्रकट किया जाता है। प्रसादकालीन नाटकों में अंकित राष्ट्रीय भावना का अध्ययन निम्नानुसार किया गया है।

- देशभक्ति
- आध्यात्मिक उत्कर्ष
- वर्तमान दुर्दशा का चित्रण
- सामाजिक अवस्था (दुर्दशा)
- राजनीतिक पराधीनता (दुर्दशा)
- स्वर्णिम अतीत का चित्रण
- स्वराज्य की माँग
- एक राष्ट्र की कल्पना
- आत्मबलिदान की भावना
- गांधीवादी विचारों की अभिव्यक्ति

प्रसादोत्तर कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना (सन् 1935 से 1947 तक):

प्रसादोत्तर काल में भारतीय जनमानस पूरी तरह से अंग्रेजों के विरोध में था। सारे देश में विविध प्रकार के आंदोलनों की हवा बहने लगी थी इसी समय महात्मा गांधीजी जैसे महान नेता का प्रभाव सारे देश पर छाया हुआ था। सन् 1942 ई. में गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। गांधीजी ने देशवासियों को विशुद्ध अहिंसात्मक असहयोग के आधार पर अंग्रेजों का विरोध करने की सलाह दी। सारे देश में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की भावना प्रकट हो रही थी। इस सारे वातावरण में राष्ट्रीय एकात्मता तथा राष्ट्रभक्ति यह एकमात्र मूलमंत्र बन गया था। राष्ट्रीय भावना तथा देशप्रेम से भरे माहौल को इस काल के नाटककारों ने सशक्तता के साथ अभिव्यक्ति दी है। इसके अलावा इन्होंने तत्कालीन माहौल को अनुकूल बनाने हेतु अनेक सकारात्मक प्रयास अपने नाटकों के माध्यम से किए हैं। तात्पर्य प्रसादोत्तर नाटकों में राष्ट्रीय भावना चरम बिंदु तक पहुँची हुई दिखाई देती है।

- स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय सहभाग
- असहयोग आंदोलन
- राष्ट्रीय एकता की भावना
- शोषण के विरोधी स्वर
- पूँजीपतियों का विरोध
- विश्वबंधुत्व की भावना
- श्रमिक वर्ग की जागृति

राष्ट्रीय भावना की परंपरा में सेठ गोविंददास का स्थान :

राष्ट्रीय भावना की परंपरा में सेठ गोविंददास का स्थान विशिष्ट है। सेठ गोविंददास पूरी तरह से राजनीतिक जीवन व्यतीत करनेवाले नाटककार होने के कारण उनके सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक जीवन में राष्ट्रीयता की भावना निश्चित तौर पर मिलती है। उन पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव होने के कारण उनकी सारी प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय भावना से प्रेरित दिखाई देती है। उन पर समाजवादी एवं प्रगतिवादी विचारधाराओं का भी प्रभाव पडा जिसने राष्ट्रीयता को नया रूप दिया। सेठ गोविंददास की राष्ट्रीय भावना राजनीति तथा साहित्य दोनों क्षेत्रों में समान रूप से अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने देश में व्याप्त असंतोष की प्रत्यक्ष अनुभूति ली थी। परिणाम

स्वरूप अन्य नाटककारों की अपेक्षा इनके नाटकों में अधिक तीव्रता तथा राष्ट्रीयता की प्रबलत्म भावना परिलक्षित होती है। शायद इसी कारण उन्होंने उदात्त एवं व्यापक कोटि की राष्ट्रीय चेतना से भरे नाटकों का सृजन किया है।

भारतमाता के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धा का भाव रखने का धर्म सेठ गोविंददास ने बखूबी निभाया है। उनके 'हर्ष' नाटक में अपने देश के प्रति अभिमान की भावना व्यक्त हुई है। सेठ गोविंददास के 'कर्तव्य', 'विकास' एवं 'कर्ण' नाटक स्वर्णिम अतीत की गौरवगाथा प्रस्तुत करते हैं। ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से नाटककार ने भावी भारत भूमि का सुनहरा सपना संजोया है। महात्मा गांधीजी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने ऐसे नाटक लिखे हैं जिनमें विश्व बंधुता तथा वसुधैव कुटुंबकम् संकल्पना साकार की है। अतीत भारत की गरिमा और महत्ता के सामने सेठ गोविंददास को वर्तमान देश की दशा अत्यंत दुर्दशापूर्ण, अपमान जनक लगती है। देश की यह अवस्था देखकर उन्हें दु:ख होता है। 'कुलीनता' नाटक में सेठ जी ने जाति प्रथा पर कठोर आघात किया तथा उससे विरोध प्रकट कर सच्ची राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है। उनके 'दलित कुसम' तथा 'पतित सुमन' नाटकों में स्त्रियों पर किए गए सामाजिक अत्याचारों पर आक्रोश प्रकटकिया है। उनके 'पाकिस्तान' नाटक में देशभक्त महफूज खाँ अंग्रेजी शासन के अन्याय–अत्याचार और शोषण से त्रस्त भारतीय जनता का सही रूप प्रस्तुत करता है। वह कहता है ''पर ऐसी विदेशी लूटनेवाली डाकू सरकार नहीं, जिसका काम उस देश का खून अर्थात् अर्थ को चूस कर विलायत को लाल बनाना है। जिसने यहाँ के अन्नदाता किसानों को मुट्ठी–मुट्ठी अनाज के लिए मोहताज कर भिखमंगा बना दिया है।'' कहना सही होगा कि सेठ गोविंददास सच्चे अर्थो में देशभक्त थे जिन्हें देश के किसानों तथा गरीबों की स्थिति का पता था।

सेठ गोविंददास ने विविध विषयों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को साकार किया है। उनके 'प्रकाश' नाटक में विदेशी संस्कृति के बढते हुए दुष्परिणाम की चिंता प्रकट हुई है। उनका मानना था कि भारत की प्रकृति तथा व्यावहारिक स्थिति विदेश से भिन्न है। इस देश का प्राचीन इतिहास है, प्राचीन धार्मिक, ऐतिहासिक आदि सिद्धांत है, प्राचीन संस्कृति है उसे पूर्ण रूप से मिटाकर उसपर पश्चिमी सिद्धांतों का लादना असंभव है। उनके 'मित्र' नाटक में वर्तमान देश की स्थिति को प्रस्तुत किया है। सेठ गोविंददास ने 'सिद्धांत स्वातंत्र्य' नाटक में अनेक राजनीतिक आंदोलनों का तर्कपूर्ण ढंग से समर्थन करके राष्ट्रीय विकास में योगदान दिया है। 'पूण्यफल' नाटक में आजादी का दीवाना लक्ष्यसिंह देश की पराधीनता मिटाने के लिए उत्सुक दिखाई देता है। वह कहता है ''वृद्ध हो या युवक, राष्ट्र और मातृभूमि के प्रति सब का समान धर्म होता है। जब मातृभूमि संकट से ग्रस्त हो तब वृद्ध या युवक सब को समान रूप से उसके उद्धार का प्रयत्न करना चाहिए।'' स्पष्ट है कि सेठजी ने ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से आत्मबलिदान की ओजस्विनी भावना को व्यक्त किया है। उनके 'कुलीनता' नाटक में राष्ट्र की सुरक्षा को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है तो 'प्रतिशोध' नाटक में राष्ट्रीय एकात्मता को वाणी देनेका कार्य किया है। जातीयता के आधार पर देश का विभाजन करने का विरोध करनेवाले सेठ गोविंददास ने हिंदू और मुस्लिमों की एकता को महत्त्वपूर्ण माना है।

सेठ गोविंददास गांधीजी के विचारों के उपासक थे। उनके बहुतांश नाटक गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। उनके 'विकास' नाटक में उन्होंने गांधीजी के प्रति दृढ़ आस्था प्रकट करते हुए उनके उच्च आदर्शों की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है। सार रूप में कहना होगा कि सेठ गोविंददास राष्ट्रीय भावना से प्रेरित ऐसे गांधीवादी नाटककार हैं जिन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय विचारधारा को बल दिया है। राष्ट्रीय विकास तथा सामाजिक एकता का पुरस्कार करनेवाले सेठ जी ने राजनीति और साहित्य दोनों क्षेत्रों में समांतर रूप से राष्ट्रीय भावों का प्रचार किया है। उनके ऐतिहासिक नाटकों में ऐसे पात्रों की सृष्टि हुई है जो त्याग और आत्मबलिदान के द्वारा राष्ट्रभक्ति का उच्च आदर्श स्थापित करते हैं। उनके नाटकों में चित्रित हुए अधिकांश पात्र सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए दिखाई देते हैं। हिंदी नाटक साहित्य में अनेक विभूतियों ने इस परंपरा को वृद्धिंगत किया है। इसी परंपरा को और अधिक पुष्ट करने तथा विकास की नई दिशाएँ प्रदान करने में सेठ गोविंददास ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता।

निष्कर्ष:

भारतेंदु कालीन नाटकों में राष्ट्रीय भावना का रूप व्यापकता के साथ प्रकट हुआ है। देशभक्ति, अतीत का गौरवगान, तत्कालीन भ्रष्ट शासन व्यवस्था के प्रति असंतोष, अपनी भाषा, संस्कृति तथा धर्म के प्रति अगाध निष्ठा जैसे अनेक राष्ट्र निर्माणात्मक भाव इस काल के नाटकों में दिखाई देते हैं। इस युग का नाटककार अपने समय के प्रति बड़ा सजग दिखाई देता है। रूढिग्रस्त, निष्क्रिय और मानसिक दासता में जकडी हुई जनता में विश्वास जगाने का काम इन नाटककारों ने किया। पाश्चात्य सभ्यता से उत्पन्न दूषित प्रभाव भ्रष्ट राजनीति के कारण उन्हें सुधारवादी एवं राष्ट्रीय विचारों की ओर प्रवृत्त होना पड़ा। इस काल के नाटककारों ने देशभक्ति के साथ-साथ देश की दशा का चित्रण भी आवश्य किया है। भारतेंदु कालीन राष्ट्रीयता में संस्कृति की एकता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और अखंडता का समावेश होता है। वस्तुत: भारतेंदु युग राष्ट्रीयता की दृष्टि से प्रथम चरण माना जाएगा। इस युग में व्यापक रूप से चित्रण होने के बावजूद राष्ट्रीयता के समग्र रूपों के दर्शन नहीं होते फिर भी देश के प्रति श्रद्धा का अत्यंत उज्वल रूप प्राप्त होता है। राजनीतिक और सामाजिक भावनाओं को व्यक्त करने की प्रवृत्ति इसी युग से शुरू हुई है। इसी युग में धीरे-धीरे स्वाधीनता की भावना का आगमन होता है। कहना होगा कि इस युग में भारतीय राष्ट्रीयता की नींव धीरे-धीरे मजबूत हो रही थी।

भारतेंदु कालीन राष्ट्रीयता प्रसाद काल में आकर और अधिक प्रखर होती गई। इस युग के नाटककारों के दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल कें नाटकों में पूरी तरह से अंग्रेजों की दासता से मुक्ति तथा नवनिर्माण का स्वर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस युग के नाटकों में राष्ट्रीय विकास की आकांक्षा प्रबल रूप से प्रकट हुई है। प्रसादकालीन नाटकों ने भारतीय समाज जीवन में अपूर्व क्रांति की है। देशवासियों के मन में आत्मसम्मान और राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति करने में इस युग के नाटक सफल सिद्ध हुए है। इस युग में कई ऐतिहासिक नाटक लिखे गए हैं। इन नाटकों के माध्यम से इतिहासकालीन ख्यातप्रिय पुरुषों का आदर्श समाज के सामने रखकर देश में राष्ट्रीय चेतना जगाने की कोशिश की है। समाज की ज्वलंत समस्याओं को इस युग के नाटककारों ने वाणी देने का महत्त्वपूर्ण काम किया है। भारतीय राष्ट्रीयता गांधीजी के व्यक्तित्व से सबसे अधिक प्रभावित है। मानवतावाद, विश्वबंधुत्व जैसे राष्ट्रीयता के विविध पहलुओं का उदय हुआ। गांधीजी के विचारों को नाटकों के माध्यम से अभिव्यक्ति देना राष्ट्रीय भावना की दृष्टि सें अधिक श्रेयस्कर सिद्ध हुआ है। जातीय एकता का प्रयास तथा राष्ट्र के भविष्य के निर्माण की नई दिशाएँ इन नाटकों के माध्यम से निर्माण होने लगी है। अंत में कहना होगा कि प्रसादयुगीन नाटकों ने राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रसादोत्तर कालीन नाटकों में राष्ट्रीयता का चरम विकास हुआ है। इस युग के नाटककार राष्ट्रीय उद्धार की कामना के साथ-साथ अनेक सामाजिक प्रश्नों के साथ भी जुडे हुए दिखाई देते हैं। उन्होंने सिर्फ समस्याएँ नहीं उठाई बल्कि उनके समाधान की खोज भी की है। एक दीर्घकालीन राष्ट्रीय संघर्ष के बाद विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने से सारे देश में चेतना का संचार हुआ था। स्वाभाविक है कि नाटककारों ने उत्साह के साथ देश की भावी नीतियाँ और भविष्य के सुनहरे सपनों के बारे में सोचना शुरू किया था। इस युग के नाटकों की यह विशेषता रही है कि इन नाटकों ने विश्वव्यापी मानव प्रेम की भावना समाविष्ट की। इन नाटककारों ने विश्वबंधुत्व का संदेश देकर समस्त मानव कल्याण की भावना को अभिव्यक्ति दी है।

सेठ गोविंददास राष्ट्रीय भावना की परंपरा को प्रखर और तेजस्वी बनानेवाले ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने विश्वबंधुत्व, त्याग, समता, अहिंसा का गौरव किया है। राजनीति तथा साहित्य दोनों क्षेत्रों में समान रूप से राष्ट्रीयता की भावना प्रकट हुई है। उनके समग्र नाटकों में राष्ट्रीयता झलकती है। ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों से संबंधित उनके नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत दिखाई देते हैं। कहना होगा कि सेठ गोविंददास राष्ट्रीय भावना से प्रेरित नाटककारों की श्रृंखला में अपना अलग स्थान रखते हैं।

संदर्भ:

1. गुरूमुख निहाल सिंह, भारत का वधानिक एवं राष्ट्रीय विकास , (प्रयाग, आत्माराम एण्ड सन्स, प्र. सं. 1952)
2. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, भारतेंदुयुगीन हिंदी नाटक, (काशी, शक्ति कार्यालय, प्र. सं. 1948)
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास (काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, प्र. सं. 1997)
4. डॉ. रामविलास शर्मा, भारतेंदु युग (कानपुर, विनोद पुस्तक मं., प्र. सं. 1956)
5. संपा. ब्रजरत्नदास, भारतेंदु ग्रंथावली (काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, पहला खंड 2007)
6. भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारत दुर्दशा (आगरा, विनोक पुस्तक मंदिर, प्र. सं. 1933, तृ. सं. 1961)
7. भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारत दुर्दशा, (आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, प्र. सं. 1933)
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारत जननी, (बांकीपुर, खड्ग विलास प्रेस, प्र. सं. 1934)
9. बदरीनारायण चाधरी,'भारत साभाग्य, प्रेमधन (इलाहाबाद, आनन्द कादम्बिनी यंत्रा, प्र. सं. 1889)
10. महाराणी पद्मावती, राधाकृष्णदास (प्रयाग, लहरी प्रेस, प्र. सं. 1912)